हिन्दी विभाग

स्नातक द्वितीय (II)

पत्र संख्या :- 03

रहस्यवाद

रहस्यवाद छायावादी काव्य आन्दोलन से संबंध है। जिज्ञासा मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इस जिज्ञासा के कारण ही वह छिपे हुए भेदों, आवरणों और रहस्यों को जानने की इच्छा करता है। प्रकृति के अनन्त क्रिया व्यापार किसी परोक्ष सत्ता द्वारा संचालित होते रहते हैं। प्रकृति में स्वयं कौन सा रहस्य है, ईश्वर की सत्ता किस रूप में है आदि विषयों की जिज्ञासा पर चिन्तन, मनन और मन्थन ही रहस्य कहलाता है इस प्रकार अप्रस्तुत विधायिनी लाक्षणिक रचना - पद्धति के द्वारा अभिव्यक्ति में जो सूक्ष्मता, गूढ़ता और सांकेतिकता का प्रवाह मिलता है, वह कविता को रहस्य गर्भित बनाता है। अर्थात् अपनी स्फुट, अपरोक्ष, अनुभूति द्वारा सत्य, परमतत्व अथवा ईश्वर का प्रत्यक्ष साक्षात्कार करने की प्रवृत्ति रहस्यवाद है। वस्तुतः रहस्यवाद के अनन्तर कवि मनोजगत से परे आत्मा के प्रसार में अज्ञात और अनन्त प्रियतम को आलम्बन मानकर प्रेम

की अभिव्यक्ति करता है। अलक्ष, निर्गुण, निराकार प्रियतम के प्रति आत्मनिवेदन का यह भाव कभी तो प्रणयानुभूति में झलक पड़ता है तो कभी मिलनेच्छा की तीव्र उत्कंठा से। अभिव्यक्ति में कभी वियोग की वेदना की असहाय टीस होती है तो कभी साक्षात्कार की समर्पित भावना।

रहस्यवाद की उद्भावना में डॉ० वर्मा की स्वयं विचारणीय है। उनकी धारणा है कि रहस्यवाद जीवात्मा की उस अन्तर्निहित प्रवृत्ति का प्रकाशन है जिसमें वह दिव्य और अलौकिक शक्ति से अपना शान्त और निश्छल सम्बन्ध जोड़ना चाहती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की दृष्टि में चिन्तन का क्षेत्र अद्वैतवाद ही भावना के क्षेत्र में रहस्यवाद है।

मध्ययुगीन रहस्यवादी कवियों से प्रतिकूल इन आधुनिक कवियों में न तो हठयोग की इच्छा है और न साधनालीन होने की चिन्ता। इनमें न तो रूढ़ि-गत संस्कार है और न तंत्र शिक्षा के प्रति कोई विशेष आग्रह।

आधुनिक रहस्यवादी कवियों का निमित्त निर्गुण, निराकार ब्रह्म के प्रति प्रणयानुभूति और प्रेमानुभूति का समर्पण अवश्य है लेकिन इसका आधार है मानववाद, सेवावाद और विश्वबन्धुत्व की सांस्कृतिक सीमा को मानते है।

इस प्रकार रहस्य का एक निश्चित दर्शन है जिसके अनुसार सत्य रहस्य है और उसका केवल दर्शन होता है। सत्य के दर्शन की प्राप्ति विशेषोन्मुख होती है, सामान्योन्मुख नहीं, यह सत्य केवल विशिष्ट जनों की के विशिष्ट क्षणों में ही उपलब्ध हो सकता है। ऐसे विशिष्ट व्यक्तियों का सत्य की ग्राह्यता के लिए जो दृष्टि मिलती है, उसे अन्तर्दृष्टि कहते हैं।

प्रस्तुतकर्त्ता
बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय
हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो० - 829227104।

दिनांक
28/04/2020

3.